IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षकों की बदलती भूमिका एवं चुनौतियों का अध्ययन

[1]Saraswati Devi, [2]Prof. Rama Kant Singh,

[1]Research Scholar, [2]Prof. & Head of Department,

[1]Department of Education,

MGKVP, Varanasi, India

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन का दस्तावेज है। इसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, कौशलपरक, बहुआयामी तथा छात्र-केंद्रित बनाना है। इस नीति में शिक्षक को शिक्षा व्यवस्था का केंद्र माना गया है। शिक्षक अब केवल ज्ञान प्रदाता नहीं रह गया, बल्कि वह मार्गदर्शक, सहायक, नवाचारक, शोधकर्ता एवं जीवन कौशल विकसित करने वाला व्यक्तित्व बन गया है। बदलते सामाजिक, तकनीकी और वैश्विक परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। साथ ही नई शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन में शिक्षकों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे डिजिटल दक्षता की कमी, प्रशिक्षण की आवश्यकता, कार्यभार में वृद्धि, संसाधनों की अनुपलब्धता तथा मूल्य आधारित शिक्षा का समन्वय। प्रस्तुत शोधपत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में शिक्षकों की बदलती भूमिका तथा उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक की बदलती भूमिका, चुनौतियाँ, शिक्षा सुधार, कौशल विकास।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास का मूल आधार होती है। शिक्षा की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षक एवं उसके शिक्षण व्यवहार पर निर्भर करती है। शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषण करने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास एवं सामाजिक चेतना के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कक्षा में शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया, रुचि, सहभागिता एवं उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इसलिए प्रभावी शिक्षण व्यवहार को शिक्षा की सफलता का महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है

वर्तमान समय में पारंपरिक रटने आधारित शिक्षण पद्धति अब विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में पर्याप्त नहीं मानी जाती। आज शिक्षा का उद्देश्य जानकारी प्रदान करने के साथ ही विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, समस्या समाधान क्षमता एवं जीवन कौशलों का विकास करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षक के शिक्षण व्यवहार में भी परिवर्तन आवश्यक हो गया है।

इसी संदर्भ में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी, विद्यार्थी-केंद्रित, कौशल-आधारित एवं अनुभवात्मक बनाने पर बल देती है। नीति में शिक्षक को शिक्षा परिवर्तन का केंद्र माना गया है तथा उसकी भूमिका को ज्ञान प्रदाता से आगे बढ़ाकर मार्गदर्शक, प्रेरक एवं अधिगम सहायक के रूप में परिभाषित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम, गतिविधि आधारित शिक्षण, बहुविषयक शिक्षा, तकनीकी एकीकरण तथा समावेशी शिक्षा जैसे तत्वों को विशेष महत्व दिया गया है। इन सभी तत्वों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आवश्यक है। विद्यार्थियों में स्वानुभव के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करने हेतु शिक्षक को अब केवल व्याख्यान देने के स्थान पर विद्यार्थियों को सक्रिय अधिगम के अवसर प्रदान करने होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि नई शिक्षा नीति शिक्षकों के व्यवहार एवं शिक्षण शैली को किस प्रकार प्रभावित करती है तथा प्रभावी शिक्षण व्यवहार के विकास में इसकी क्या भूमिका है? नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षक को तकनीकी दक्ष, नवाचारी, संवेदनशील तथा शोधपरक होना आवश्यक है। इसके साथ ही शिक्षक को समावेशी शिक्षा, बहुभाषिकता तथा डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में भी दक्ष बनना होगा। हालांकि इन नई भूमिकाओं के निर्वहन में शिक्षकों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं, जिनका समाधान आवश्यक है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं। वैश्वीकरण, वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी विकास तथा सामाजिक आवश्यकताओं के कारण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सहभागी एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। शिक्षा की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षक एवं उसके शिक्षण व्यवहार पर निर्भर करती है। शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व विकास तथा सामाजिक मूल्यों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इसलिए शिक्षण व्यवहार का अध्ययन अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन लाने का प्रयास करती है। यह नीति अनुभवात्मक अधिगम, गतिविधि आधारित शिक्षण, समावेशी शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन तथा तकनीकी एकीकरण पर विशेष बल देती है। इन उद्देश्यों को प्रभावी रूप से प्राप्त करना तभी संभव है, जब शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाया जाए। वर्तमान में अनेक शिक्षक अभी भी पारंपरिक व्याख्यान पद्धति का उपयोग करते हैं, जिसके कारण विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता एवं सृजनात्मकता प्रभावित होती है। नई शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षक को मार्गदर्शक, प्रेरक एवं अधिगम

सहायक की भूमिका निभानी होगी। इसके लिए शिक्षकों के व्यवहार, दृष्टिकोण एवं शिक्षण शैली का विश्लेषण आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त डिजिटल शिक्षा एवं ऑनलाइन शिक्षण के बढ़ते प्रभाव ने भी शिक्षण व्यवहार को नई दिशा प्रदान की है। शिक्षकों को तकनीकी दक्षता, नवाचार एवं समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षण व्यवहार के विभिन्न आयामों, चुनौतियों तथा व्यावसायिक विकास की आवश्यकताओं को समझने में सहायक होगा।

इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षकों, शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी शिक्षा व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवहार, शिक्षक की भूमिका एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अनेक शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं ने महत्वपूर्ण अध्ययन किए हैं।

Dewey, John (1938) ने अपनी पुस्तक Experience and Education में अनुभवात्मक अधिगम को शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार माना। उनके अनुसार शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न विद्यार्थियों को अनुभवों के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करें। यह विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अवधारणा से भी मेल खाता है।

महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा के माध्यम से कार्य एवं अनुभव आधारित शिक्षण पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने तथा विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास की आवश्यकता बताई। गांधीजी का शिक्षा दर्शन आधुनिक विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण व्यवहार का आधार माना जाता है।

अग्रवाल (2019) ने शिक्षण व्यवहार को शिक्षक की प्रभावशीलता का प्रमुख तत्व माना तथा यह स्पष्ट किया कि शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं कक्षा सहभागिता को प्रभावित करता है। उन्होंने प्रभावी संचार, सहानुभूति एवं कक्षा प्रबंधन को शिक्षण व्यवहार के महत्वपूर्ण आयाम बताया।

भाटिया एवं आहूजा (2018) ने आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों पर बल देते हुए कहा कि वर्तमान समय में शिक्षकों को गतिविधि आधारित एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण अपनाना चाहिए। उनके अनुसार पारंपरिक व्याख्यान पद्धति विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को सीमित करती है।

NCERT (2023) द्वारा प्रकाशित National Curriculum Framework 2023 में अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक शिक्षा तथा समावेशी शिक्षण को शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का आधार माना गया है। इसमें शिक्षक को अधिगम का सहायक एवं मार्गदर्शक बताया गया है।

शर्मा एवं अन्य (2023) ने शिक्षक शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास के संदर्भ में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों में तकनीकी दक्षता, नवाचार एवं समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने पर बल देती है। उनके अनुसार सतत व्यावसायिक विकास के बिना प्रभावी शिक्षण व्यवहार संभव नहीं है।

कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया कि शिक्षकों के समक्ष संसाधनों की कमी, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव, अधिक छात्र संख्या एवं पारंपरिक मानसिकता जैसी चुनौतियाँ प्रभावी शिक्षण व्यवहार में बाधा उत्पन्न करती हैं। इसके बावजूद नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करती है।

उपरोक्त साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवहार शिक्षा की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण आधार है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक की भूमिका को अधिक सक्रिय, नवाचारी एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर बल देती है। तथापि शिक्षण व्यवहार एवं नई शिक्षा नीति के संदर्भ में और अधिक गुणात्मक अध्ययन की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अवधारणा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना है। नीति में शिक्षक को शिक्षा में परिवर्तन का केंद्र माना गया है। इस नीति के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं—

- विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा
- बहुविषयक अधिगम
- अनुभवात्मक अधिगम
- समावेशी शिक्षा
- तकनीकी एकीकरण
- सतत व्यावसायिक विकास
- मातृभाषा आधारित शिक्षण
- कौशल आधारित अधिगम

इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अवधारणा एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करना है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय प्रगति को सुनिश्चित कर सके। यह नीति भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करने का प्रयास करती है।

शिक्षण व्यवहार की अवधारणा

शिक्षण व्यवहार से आशय शिक्षक द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान प्रदर्शित उन क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं, दृष्टिकोणों एवं अंतःक्रियाओं से है, जो विद्यार्थियों के अधिगम को प्रभावित करती हैं। यह शिक्षक के व्यक्तित्व, संचार शैली, कक्षा प्रबंधन, प्रश्न पूछने की तकनीक, विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार तथा शिक्षण विधियों का समग्र रूप होता है। प्रभावी शिक्षण व्यवहार विद्यार्थियों में सीखने की रुचि, सहभागिता, आत्मविश्वास एवं सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक एवं अधिगम सहायक के रूप में प्रस्तुत करती है। इसलिए प्रभावी शिक्षण व्यवहार शिक्षा की गुणवत्ता एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। शिक्षण व्यवहार प्रभावी तभी माना जाता है जब वह विद्यार्थियों को सक्रिय बनाए, सहभागिता को प्रोत्साहित करें, सीखने के अनुकूल वातावरण बनाए और विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझे।

शिक्षक की बदलती भूमिका

परंपरागत शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत माना जाता था, जबकि NEP 2020 में शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक एवं सहयोगी के रूप में परिवर्तित हुई है।
अब शिक्षक की प्रमुख भूमिकाएँ हैं—

- अधिगम का मार्गदर्शन करना
- प्रेरणा प्रदान करना
- सीखने के अवसर उपलब्ध कराना
- नैतिक एवं मूल्य आधारित शिक्षा देना
- विद्यार्थियों में कौशल विकसित करना
- छात्र-केंद्रित शिक्षण प्रदान करना
- समावेशी शिक्षा के प्रवर्तक
- शोधकर्ता एवं नवाचारक की भूमिका
- बहुभाषिकता को बढ़ावा देना

वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण विधियों तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं में व्यापक परिवर्तन हुआ है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षक की भूमिका भी पारंपरिक स्वरूप से बदलकर अधिक व्यापक एवं बहुआयामी हो गई है। पहले शिक्षक को केवल ज्ञान का मुख्य स्रोत एवं सूचना प्रदाता माना जाता था, जहाँ शिक्षण प्रक्रिया मुख्यतः व्याख्यान पद्धति पर आधारित होती थी। विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता के रूप में केवल शिक्षक द्वारा दी गई जानकारी को ग्रहण करते थे।

किन्तु आधुनिक शिक्षा व्यवस्था, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। अब शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक, सहयोगी एवं अधिगम सहायक के रूप में देखा जाता है। शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को केवल तथ्य याद कराना नहीं, बल्कि उनमें आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता, सृजनात्मकता एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना है।

इस प्रकार आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका अधिक सक्रिय, रचनात्मक एवं उत्तरदायित्व पूर्ण हो गई है। शिक्षक अब केवल अध्यापक नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है।

राष्ट्रीय शिक्षा 2020 के संदर्भ में शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ

यद्यपि NEP 2020 के द्वारा शिक्षण व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने के प्रयास किये जा रहे है, साथ ही वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण व्यवहार को प्रभावी एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने के लिए भी अनेक प्रयास किए जा रहे हैं, किन्तु इसके क्रियान्वयन में कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं। बदलती शैक्षिक नीतियाँ, तकनीकी विकास तथा विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के कारण शिक्षकों के सामने नई परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। प्रभावी शिक्षण व्यवहार के विकास में ये चुनौतियाँ महत्वपूर्ण बाधा बनती हैं।

सबसे प्रमुख चुनौती शिक्षकों के अपर्याप्त प्रशिक्षण की है। अनेक शिक्षक अभी भी पारंपरिक शिक्षण विधियों का उपयोग करते हैं तथा आधुनिक शिक्षण तकनीकों, गतिविधि आधारित अधिगम एवं डिजिटल शिक्षण संसाधनों के प्रयोग में पूर्ण दक्ष नहीं होते। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण पर बल दिया गया है, किन्तु इसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण सभी शिक्षकों को समान रूप से उपलब्ध नहीं हो पाता।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती तकनीकी संसाधनों की कमी है। ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के विद्यालयों में इंटरनेट, स्मार्ट कक्षा, कंप्यूटर एवं अन्य डिजिटल उपकरणों का अभाव शिक्षण व्यवहार को प्रभावित करता है। अधिक छात्र संख्या भी प्रभावी शिक्षण व्यवहार में बाधा उत्पन्न करती है। जब एक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होती है, तब शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाता। इससे विद्यार्थी-केंद्रित एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण प्रभावित होता है।

समय की कमी भी एक बड़ी समस्या है। पाठ्यक्रम को निर्धारित समय में पूरा करने के दबाव के कारण शिक्षक गतिविधि आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण के लिए पर्याप्त समय नहीं दे पाते। परिणामस्वरूप शिक्षण पुनः व्याख्यान पद्धति तक सीमित हो जाता है।

इसके अतिरिक्त पारंपरिक मानसिकता, प्रशासनिक कार्यों का अधिक बोझ, मूल्यांकन संबंधी दबाव तथा अभिभावकों की अपेक्षाएँ भी शिक्षण व्यवहार को प्रभावित करती हैं। कई शिक्षक नवाचार अपनाने में संकोच करते हैं क्योंकि वे पारंपरिक पद्धतियों को अधिक सुरक्षित मानते हैं।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में भी शिक्षकों के सामने चुनौतियाँ हैं। विभिन्न सामाजिक, भाषाई एवं बौद्धिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझना तथा उनके अनुसार शिक्षण करना एक जटिल कार्य है। इसके लिए विशेष प्रशिक्षण एवं संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार प्रभावी शिक्षण व्यवहार के विकास में अनेक व्यावहारिक एवं संरचनात्मक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन चुनौतियों का समाधान उचित शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता, तकनीकी सहायता एवं सकारात्मक शैक्षिक वातावरण के माध्यम से किया जा सकता है।

शिक्षकों की भूमिका को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव

1. शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा, समावेशी शिक्षा, नवाचारी शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन तकनीकों का नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
2. विद्यालयों में इंटरनेट, स्मार्ट बोर्ड, कंप्यूटर एवं ई-लर्निंग सामग्री की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।
3. बी.एड. एवं अन्य शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को व्यवहारिक एवं कौशल आधारित बनाया जाना चाहिए।
4. शिक्षकों को गैर-शैक्षिक कार्यों से मुक्त कर शिक्षण कार्य पर अधिक ध्यान देने का अवसर दिया जाना चाहिए।
5. शिक्षकों को शैक्षिक शोध, कार्यशालाओं एवं नवाचार कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।
6. विद्यालय प्रशासन, अभिभावकों एवं समाज को शिक्षकों के साथ सहयोगात्मक संबंध स्थापित करने चाहिए।
7. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन हेतु परामर्श सेवाएँ एवं सहायता कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

- शिक्षा प्रणाली अधिक छात्र-केंद्रित एवं समावेशी बनेगी।
- शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि होगी।
- तकनीकी एवं कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा।
- विद्यार्थियों में रचनात्मकता एवं आलोचनात्मक चिंतन विकसित होगा।
- शिक्षा का स्तर वैश्विक मानकों के अनुरूप होगा।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनकारी कदम है। इस नीति ने शिक्षक की भूमिका को अत्यंत व्यापक एवं महत्वपूर्ण बना दिया है। शिक्षक अब केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, नवाचारक, शोधकर्ता, तकनीकी विशेषज्ञ तथा नैतिक मूल्यों का संवाहक बन गया है।

हालांकि नई भूमिकाओं के निर्वहन में शिक्षकों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं, जैसे तकनीकी दक्षता का अभाव, संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं बढ़ता कार्यभार। इन चुनौतियों का समाधान सरकार, शैक्षिक संस्थानों एवं समाज के संयुक्त प्रयासों से ही संभव है। यदि शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण, संसाधन एवं सहयोग प्रदान किया जाए, तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की सफल प्राप्ति संभव होगी और भारत एक ज्ञान आधारित समाज के रूप में विकसित हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. अग्रवाल, जे. सी. (2019). शिक्षा का दर्शन एवं समाजशास्त्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. गुप्ता, एस. पी. (2014): शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. शर्मा, आर.ए. (2018): शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. Aggarwal, J.C. (2019). Teacher and Education in a Developing Society. Vikas Publishing House.
5. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016): Research in Education (10th ed.), Pearson Education, New Delhi.
6. Gulati, N., & Jain, M. (2022): The Idea of School Teacher in the National Education Policy 2020, Journal of Indian Education. NCERT Journals
7. John Dewey. (1938): Experience and Education. New York: Macmillan.
8. Kothari Commission(1966): Education and National Development. Ministry of Education, Government of India.
9. Kothari, C. R. (2019): Research Methodology: Methods and Techniques, New Age International Publishers, New Delhi.
10. Mangal, S. K. (2016): Advanced Educational Psychology, PHI Learning Pvt. Ltd., New Delhi.
11. Mahatma Gandhi (1953): Basic Education, Navajivan Publishing House, Ahmedabad.

12. NCERT (2021). Implementation of NEP-2020 in Schools. New Delhi.
13. NCERT. (2023): National Curriculum Framework 2023, New Delhi.
14. National Education Policy 2020 (2020): National Education Policy 2020, Ministry of Education, Government of India, New Delhi.
15. Paul, P. K. (2025): Impact of NEP 2020 on Teacher Education and Professional Development in India, IER Journal
16. Qargha, G. O. (2026): India's National Education Policy 2020 in Classrooms. Brookings Institution, Brookings
17. Sharma, R. A. (2017) :Teacher Education and Educational Technology, Loyal Book Depot, Meerut.
18. Sharma, G., Mittal, R., & Zayan (2023): Teacher Education in India's National Education Policy 2020, Sage Journals.
19. Singh, Y. K. (2011): Teacher Education. New Delhi: APH Publishing Corporation.
20. Sinha, E., & Kumar, A. (2025): Experiential Learning: An Emerging Pedagogical Practice Across School Stages in Light of NEP 2020. IJTE Chicago
21. UNESCO. (2021): Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education. Paris: UNESCO Publishing.